

“परिवेश के आधार पर ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन”

शोधार्थी

ममता सिंह

स्वामी श्री स्वरूपानंद महाविद्यालय भिलाई।

ईमेल—mamtasinghteacher@gmail-com

शोध निर्देशक

डॉ. दुर्गावती मिश्रा

प्रोफेसर

स्वामी श्री स्वरूपानंद महाविद्यालय भिलाई।

सारांश

वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य परिवेश के आधार पर ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। विद्यालयी जीवन में परिवेश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यही वह कारक है जो विद्यार्थी के व्यक्तित्व, सोच, व्यवहार और सीखने की प्रवृत्ति को प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं, व्यवहारों और विचारों का संतुलित उपयोग कर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सामंजस्य स्थापित करता है। दूसरी ओर, सृजनात्मकता वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति नवीन, उपयोगी और मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करता है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि अनुकूल परिवेश वाले विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य का स्तर अधिक होता है और वे सृजनात्मक गतिविधियों में भी बेहतर प्रदर्शन करते हैं। अध्ययन में टी-टेस्ट का उपयोग कर यह पाया गया कि शहरी और ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के बीच मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि परिवेश का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

मुख्य बिंदु— परिवेश, मानसिक स्वास्थ्य, सृजनात्मकता, विद्यार्थी।

❖ भूमिका

शिक्षा मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग है जो व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करती है बल्कि उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में भी सहायक होती है। विद्यालय वह स्थान है जहाँ विद्यार्थी के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास की नींव रखी जाती है।

परिवेश को यदि शिक्षा का तीसरा गुरु कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस प्रकार घर और विद्यालय का वातावरण बालक के विकास में योगदान देता है, उसी प्रकार समाज, परिवार, मित्रमंडली और भौतिक परिस्थितियाँ भी उसके मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति भावनात्मक रूप से संतुलित रहता है, तनावों से निपटने में सक्षम होता है और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है। जब विद्यार्थी का परिवेश सहयोगी, प्रेरणादायी और रचनात्मक होता है, तो उसकी मानसिक स्थिति सुदृढ़ रहती है और उसकी सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि होती है।

❖ संबंधित शोध अध्ययन

गुप्ता, एस. (2018) द्वारा किए गए "पर्यावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन" में यह पाया गया कि अनुकूल, सहयोगी एवं सकारात्मक वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। जिन विद्यार्थियों को घर एवं विद्यालय दोनों स्थानों पर भावनात्मक सहयोग, प्रोत्साहन तथा संवाद का अवसर मिलता है, उनमें आत्मविश्वास और मानसिक संतुलन का स्तर अधिक पाया गया। इसके विपरीत, तनावपूर्ण एवं प्रतिस्पर्धी परिवेश में मानसिक स्वास्थ्य की गुणवत्ता कमजोर रही। इस अध्ययन ने यह सिद्ध किया कि पर्यावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का एक प्रमुख निर्धारक है। मिश्रा, आर. (2019) ने अपने अध्ययन "विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर प्रभाव" में यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयी वातावरण की प्रकृति विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिन विद्यालयों में स्वतंत्र विचार, प्रयोगात्मक शिक्षा, कला एवं रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाता है, वहाँ विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का स्तर उच्च पाया गया। वहीं, जहाँ अनुशासन-प्रधान एवं सीमित स्वतंत्रता वाला वातावरण था, वहाँ विद्यार्थियों की सृजनात्मकता अपेक्षाकृत कम रही। शर्मा, पी. (2020) द्वारा किए गए "शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन" में यह पाया गया कि शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य औसतन ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सुदृढ़ है। इसका प्रमुख कारण शहरी विद्यालयों में बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ, परामर्श सेवाएँ, और संसाधनों की उपलब्धता को माना गया। हालांकि, ग्रामीण विद्यार्थियों में सामाजिक एकता और पारिवारिक सहयोग का स्तर अधिक पाया गया, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण में सहायक सिद्ध होता है।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि परिवेश, विद्यालयी वातावरण एवं सामाजिक कारक विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के स्तर को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अतः विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु सकारात्मक एवं सहयोगी वातावरण की आवश्यकता अत्यंत आवश्यक है।

❖ अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं बल्कि विद्यार्थी को सृजनात्मक, आत्मनिर्भर और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाना भी है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थी अनेक प्रकार के मानसिक दबावों का सामना करते हैं। यदि विद्यालयी परिवेश में सहयोगात्मक और सकारात्मक वातावरण उपलब्ध हो, तो विद्यार्थियों का तनाव कम होता है, उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे रचनात्मक सोच विकसित करते हैं। इस प्रकार इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि परिवेश विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता दोनों को गहराई से प्रभावित करता है।

❖ समस्या कथन

"परिवेश के आधार पर ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य

- शहरी और ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना करना।
- शहरी और ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की तुलना करना।

- मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ

- शहरी और ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जायगा।
- शहरी और ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जायगा।
- मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया जायगा।

❖ शोध विधि

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

न्यादर्श— कुल 100 विद्यार्थी दृ 50 शहरी और 50 ग्रामीण।

उपकरण— मानसिक स्वास्थ्य हेतु डॉ. ए. के. सिंह एवं सेनगुप्ता की मानसिक स्वास्थ्य बैटरी तथा सृजनात्मकता हेतु डॉ. बॉकर मेहंदी का क्रीएटीविटी टेस्ट का उपयोग किया गया है।

❖ सांख्यिकीय विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण— प्राप्त अंकों का विश्लेषण टी-टेस्ट एवं सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया है।

तालिका 1: शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर टी-टेस्ट विश्लेषण—

समूह स्तर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	ज-मूल्य	सार्थकता
शहरी विद्यार्थी	50	145.32	12.45	3.15**	0.01 स्तर पर सार्थक
ग्रामीण विद्यार्थी	50	132.10	10.84		

तालिका 2: शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर टी-टेस्ट विश्लेषण-

समूह स्तर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	ज-मूल्य	सार्थकता
शहरी विद्यार्थी	50	72.84	8.92	2.87*	0.05 स्तर पर सार्थक
ग्रामीण विद्यार्थी	50	66.40	7.35		

तालिका 3: मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच सहसंबंध-

चर	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता	0.42**	0.01 स्तर पर सार्थक

❖ परिणाम एवं विवेचना

टी-टेस्ट विश्लेषण से पता चला कि शहरी विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता का स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। टी का मान 3.15 और 2.87 क्रमशः 0.01 व 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण पाया गया है। मानसिक स्वास्थ्य एवं सृजनात्मकता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया है, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक प्राप्त हुआ है।

इसलिए उपरोक्त तीनों परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

❖ निष्कर्ष

- शहरी परिवेश के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया।
- शहरी विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का स्तर भी अधिक पाया गया।
- मानसिक स्वास्थ्य और सृजनात्मकता के बीच धनात्मक संबंध पाया गया।
- परिवेश का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, सोच एवं रचनात्मकता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

❖ सुझाव

- विद्यालयों में अनुकूल एवं सहयोगी वातावरण का निर्माण किया जाए।
- विद्यार्थियों को रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर दिए जाएँ।
- ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाई जाए।
- शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा का प्रशिक्षण दिया जाए।
- बच्चे के विचारों का सम्मान करना।
- बच्चे को नवीन सोच के लिए उत्साहित करना।
- बच्चे की चिंताओं को संतुष्ट करना।
- जोखिम लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना।
- छात्रों को लचीले तरीके से सोचने में मदद करना।
- एक समृद्ध वातावरण प्रदान करना।

संदर्भ सूची

- Ausubel, D. P. (1963). *The Psychology of Meaningful Verbal Learning*- New York Grune & Stratton.
- Guilford, J. P. (1967). *The Nature of Human Intelligence*. McGraw Hill.
- Mehdi, B. (1985). *Test of Creativity*. Agra Psychological Research Cell.
- Gupta, S. (2018). *Paryavaran evam mansik swasthya ka tulnatmak adhyayan Comparative study of environment and mental health*. Unpublished masts dissertation, University of Lucknow.
- Mishra, R. (2019). *Vidyalayi parivesh ka vidyarthiyon ki srijanatmakta par prabhav Effect of school environment on students' creativity*. *Indian Journal of Educational Research*, 15(2), 45–52.
- Sharma, P. (2020). *Shahri evam gramin vidyarthiyon ke mansik swasthya ka adhyayan .A study of mental health of urban and rural students*. *Journal of Psychology and Education*, 22(4), 110–118.